Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# RAS

## राजस्थान प्रशासनिक सेवा

**राजस्थान लोक सेवा आयोग**

भाग - 2

## राजस्थान की कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | राजस्थान की चित्रकला | 1 |
| 2 | राजस्थान के हस्तशिल्प | 12 |
| 3 | राजस्थानी भाषा और बोलियाँ | 20 |
| 4 | राजस्थान के लोकगीत और वाद्य यंत्र | 24 |
| 5 | राजस्थान के लोक नृत्य | 37 |
| 6 | राजस्थानी लोकनाट्य | 42 |
| 7 | राजस्थान का साहित्य | 46 |
| 8 | राजस्थान के संत और लोक देवता | 58 |
| 9 | राजस्थान के मेले और त्यौहार | 75 |
| 10 | राजस्थान के आभूषण और वेशभूषा | 88 |
| 11 | राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला | 92 |
| 12 | राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज एवं प्रथाएँ | 114 |
| 13 | प्रमुख जनजातियाँ | 118 |

# 1 CHAPTER राजस्थान की चित्रकला

**विगत वर्षों के प्रश्न**

Q.1 सूची-I व सूची-II को सुमेलित करते हुए राजस्थान की प्रसिद्ध चित्रकला शैलियों एवं उनके चित्रकारों के संबंध में सही विकल्प चुनिये : (2024)

| सूची-I | | सूची-II | |
|---|---|---|---|
| **A.** | किशनगढ़ | (i) | साहिबदीन |
| **B.** | बीकानेर | (ii) | निहालचंद |
| **C.** | मेवाड़ | (iii) | अली रज़ा |
| **D.** | मारवाड़ | (iv) | शिवदास |

(1) A - ii, B - iv, C - i, D – iii
(2) A - ii, B - iii, C - i, D - iv
(3) A - ii, B - iii, C - iv, D – I
(4) A - ii, B - i, C - iii, D – iv

Q2. प्रसिद्ध कलाकार मुहम्मद शाह जयपुर के किस महाराजा के दरबारी चित्रकार थे? (2023)

(1) सवाई राम सिंह II
(2) सवाई जगत सिंह
(3) सवाई प्रताप सिंह
(4) सवाई जय सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

Q3. निम्नलिखित में से कौन सा चित्रकार अलवर स्कूल ऑफ पेंटिंग से संबंधित नहीं है? (2018)

(1) जामनदास
(2) बकासाराम
(3) नानकराम
(4) नंदराम

**विश्लेषण :-** पिछले पूछे गए सवालों का मुख्य उद्देश्य यह पहचानना था कि कौनसे कलाकार विशिष्ट राजस्थानी चित्रकला शैलियों से जुड़े हैं। प्रभावी ढंग से तैयारी के लिए, यह अध्याय इस तरीके से प्रस्तुत किया गया है कि इसमें विभिन्न राजस्थानी चित्रकला शैलियों की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से वर्णित की गई हैं, प्रमुख कलाकारों के लिए फ्लैशकार्ड(स्मृति सूचक संकेत) बनाए गए हैं, और प्रतिनिधि कलाकृतियों का विश्लेषण किया गया है। इस तरह पाठ्य सामग्री को आसानी से याद रखा जा सकेगा, जिससे राजस्थानी चित्रकला की सांस्कृतिक और कलात्मक विशेषताओं को बेहतर समझने में मदद मिलेगी।

- प्राचीन भारतीय ग्रंथों में चित्रकला को 64 कलाओं में से एक महत्वपूर्ण कला माना गया है।
- भारतीय चित्रकला में राजस्थानी चित्रकला का विशेष स्थान है, जिसकी अपनी एक विशिष्ट शैली है।
- आदिम मानव के चित्र आलनिया, दर्रा (कोटा), बैराठ (जयपुर) और दर्र बहराणा (भरतपुर) की गुफाओं में पाए गए हैं।
- प्रसिद्ध कलाकार आनंद कुमारस्वामी ने 1916 में अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिंग्स' में पहली बार इसका वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।
- राजस्थानी चित्रकला को एच.सी. मेहता ने अपनी पुस्तक "स्टडीज़ इन इंडियन पेंटिंग्स" में एक हिंदू चित्रकला शैली के रूप में वर्णित किया है।
- कार्ल खंडेलवाल के लेखन "थालिवास फ्रॉम राजस्थान" ने पहली बार विद्वानों का ध्यान यहाँ की चित्रकला के विशेष पहलुओं की ओर आकर्षित किया और इस पर मुगल प्रभाव को स्पष्ट रूप से दिखाया।

- कार्ल खंडेलवाल ने 17वीं सदी को राजस्थानी चित्रकला का स्वर्णिम युग माना है।
- विलियम लॉरेंस के अनुसार, राजस्थानी चित्रकला शैली पूरी तरह से भारतीय है।
- भारत में चित्रकला की दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं:

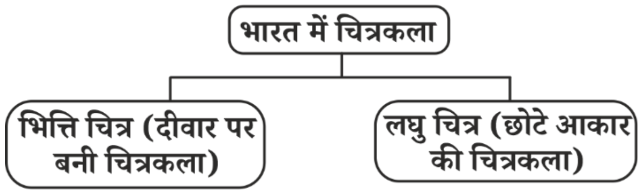


## भित्ति चित्र

किसी दीवार, छत या अन्य बड़ी स्थायी सतह पर बनी चित्रकला।

### फ्रेस्को ब्यून / आलागिला / मोरकासी

- ताज़े प्लास्टर वाली गीली दीवार पर की जाने वाली चित्रकला को 'फ्रेस्को ब्यूनो' चित्रकला कहते हैं।
- राजस्थान में इसे 'अरायश' या आलागिला' विधि भी कहा जाता है। शेखावटी क्षेत्र में इसे 'पाना' के नाम से भी जाना जाता है अकबर और जहांगीर के समय में आलागिला या अरायश विधि को इटली से लाया गया था।
- मुगलों के साथ जयपुर शासकों के घनिष्ठ संबंधों के कारण यह कला जयपुर में प्रसारित हुई

### शेखावटी के भित्ति चित्र

- शेखावटी के भित्ति चित्रों के कारण इसे "ओपन आर्ट गैलरी" कहा जाता है।
- शेखावटी पर जयपुर शैली के भित्ति चित्रों का सर्वाधिक प्रभाव है।
- यहाँ बड़े हाथियों, घोड़ों, चौबदारों, घुड़सवारों आदि के लोक-कलात्मक चित्र दीवारों पर देखे जा सकते है।
- 19वीं सदी के मध्य से 20वीं सदी की शुरुआत तक, शेखावटी के अमीरों ने बड़ी-बड़ी हवेलियों का निर्माण कर इस कला को प्रोत्साहित किया।
- नवलगढ़, रामगढ़, फतेहपुर,लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, मंडावा, बिसाऊ आदि के भित्ति चित्र अनूठे हैं।
- फ्रांस के नादिन ले प्रिंस ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ति चित्रों के संरक्षण में सराहनीय कार्य किया है।

## राजस्थान की लघु चित्रकला

**नोट:** मिनिएचर पेंटिंग्स - ये छोटी और नाजुक चित्रकृतियाँ होती हैं, जो अक्सर छोटे वस्त्रों, कागज़ या हाथी दांत पर बनाई जाती हैं। यह चित्रकला विशेष रूप से जोधपुर, जयपुर और किशनगढ़ जैसे क्षेत्रों में प्रचलित है। यह मुगलों का भारत को दिया हुआ एक अनमोल उपहार है।

**राजस्थान की मिनिएचर पेंटिंग्स की विशेषताएँ:**

a. विषय: रामायण और महाभारत की घटनाएँ जैसे, कृष्ण का जीवन, सुंदर परिदृश्य आदि।
b. मूल्यवान पत्थरों, सोने और चांदी का उपयोग किया गया है तथा इसमें मुगल प्रभाव भी दिखाई देता है।
c. भारतीय राजस्थानी चित्रकला में चौरापंचिका शैली प्रमुख है। उदाहरण – देवी महात्म्य, महाभारत का आरण्यक पर्व, लौर-चंदा श्रृंखला, गीत गोविंद चित्रकला, और रागिनी भैरवी।

## राजस्थानी चित्रकला के स्कूल

राजस्थानी चित्रकला के स्कूल (भूगोल और संस्कृति के आधार पर)

**राजस्थानी चित्रकला के स्कूल**

**मेवाड़ स्कूल**
- चावड़ शैली, उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, देवगढ़ शैली, सावर शैली, शाहपुरा शैली
- बनेड़ा, बागोर, बेगूं, केलवा आदि ठिकानों की कला।

**मारवाड़ स्कूल**
- जोधपुर शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ़ शैली, अजमेर शैली, नागौर शैली, सिरोही शैली, जैसलमेर शैली
- घनेराव, रियां, भिनाय, जुनियाँ आदि ठिकानों की कला।

**हाड़ोती स्कूल**
- कोटा, बूंदी और झालावाड़ शैलियाँ

**ढूंढाड़ स्कूल**
- आमेर शैली, जयपुर शैली, शेखावाटी शैली, अलवर शैली, उनियारा शैली
- झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकानों की कला।

## मेवाड़ शैली

- राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभिक और मौलिक रूप मेवाड़ शैली में पाया जाता है।
- पोथी ग्रंथों का चित्रण : इस शैली में पोथी ग्रंथों का अधिक चित्रण देखने को मिलता है।
- चौरपंचाशिका शैली की उत्पत्ति : डगलस बैरेट और बेंसिल ने चौरपंचाशिका शैली की उत्पत्ति मेवाड़ शैली से मानी है।
- महाराणा कुम्भा का काल : इसे मेवाड़ शैली का स्वर्ण युग माना गया है।
- उदय सिंह का काल (1535-1572 ई.) : उदय सिंह के शासनकाल में बनाए गए चित्रों में भागवत पुराण के "पारिजात अवतरण" (1540 ई.) का चित्र मेवाड़ के चित्रकार नानाराम की कृति है।
- महाराणा प्रताप का समय : इस काल में चावंड में चित्रकला का विकास हुआ और इस काल का प्रसिद्ध चित्र "ढोला मारू" (1592 ई.) है।
- महाराणा अमर सिंह-I (1572-1620), करण सिंह और जगत सिंह-I (1628-52 ई.) के शासन में मेवाड़ शैली का और अधिक विकास हुआ।
- प्रसिद्ध चित्रकार: नूरुद्दीन, मनोहर, साहिबदीन, कृपाराम, जीवराम , अमरदास, शिवदास, शंकरदास, माधोदास, दाना, रामसिंह, जीतमल, कालूराम, वीरजी, नारायणदास, छज्जू, देवदास, किशनदास आदि।

**प्रमुख उपशैलियाँ**

### 1) उदयपुर (मेवाड़) शैली

- प्रमुख शासक : महाराणा जगत सिंह (लघु चित्रों का स्वर्ण युग)
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ : 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' ((मेवाड़ चित्रकला की सबसे प्राचीन चित्रित पुस्तक, 1260 ई. में *कमलचंद्र* द्वारा *रावल तेज सिंह* के समय में चित्रित), *मालती माधव* (भवभूति द्वारा), 'सुपासनहचरित' (1423), गीत गोविंद आख्यायिका, 'रामायण शुकर', *सूरसागर, रसिक प्रिया, नल दमयंती, कादंबरी, बिहारी सतसई, भागवत पुराण* आदि, महाराणा तेज सिंह के समय में रचित।
- प्रमुख चित्रकार : साहिबदीन (1628 में *रागमाला* चित्रित**)** , मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि।
- मुख्य रंग : पीला और लाल
- कला विद्यालय : महाराणा जगत सिंह द्वारा 'चितेरों री ओवरी' नामक एक कला विद्यालय की स्थापना की गई, जिसे 'तस्वीरां रो कारखानो' भी कहा जाता है।
- जगत सिंह के शासनकाल में चित्रण : रसिकप्रिया, गीता गोविंद, भागवत पुराण और रामायण जैसे ग्रंथों पर चित्र बनाए गए।

Unleash the topper in you

- प्रसिद्ध चित्रकार नूरुद्दीन: उन्होंने महाराणा संग्राम सिंह II (1710-34 ई.) के शासनकाल में 'कलीला दमना' (सबसे प्रसिद्ध चित्र) चित्रित किया। इसके साथ ही मुल्ला दो प्याजा के लतीफे, बिहारी सतसई, सुंदर श्रृंगार पर आधारित चित्र भी बनाए।
- महाराणा अमरसिंह प्रथम (1572–1620) के शासनकाल के दौरान मेवाड़ शैली की चित्रकला पर मुग़ल शैली का विशेष प्रभाव पड़ा। इस पर गुर्जर और जैन शैली का अधिकतम प्रभाव देखा गया।

**2) नाथद्वारा उप-शैली/राज सिंह शैली**

- *नाथद्वारा शैली* की शुरुआत नाथद्वारा में *श्रीनाथजी मंदिर* की स्थापना (1671–72 ई.) से मानी जाती है।
- मेवाड़ शैली का दूसरा प्रमुख चरण नाथद्वारा शैली के रूप में देखा जाता है।
- यह उदयपुर शैली और ब्रज शैली का संयोजन है।
- नाथद्वारा शैली का मूल योगदान श्रीनाथजी की प्रतिमा के पीछे सजावट के लिए बड़े कपड़े के पर्दे पर बनाए गए चित्र थे, जिन्हें 'पिछवाई' के नाम से जाना जाता है।
- प्रमुख शासक: महाराणा राज सिंह
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ: कृष्ण लीला के चित्र, श्रीनाथजी की मूर्तियाँ, ग्वाल-बाल, गोपियाँ, वल्लभ संप्रदाय के संतों के चित्र, *यमुना स्नान, आंख मिचौली, हिंडोला, जन्माष्टमी, अन्नकूट*।
- प्रमुख चित्रकार: बाबा रामचंद्र के अलावा, नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, चंपालाल, घासीराम, तुलसीराम, *राज सिंह, लच्छीराम, घनश्याम, कैलाश शर्मा, नरोत्तम शर्मा, विठ्ठलदास शर्मा* आदि भी प्रसिद्ध हैं। महिला चित्रकारों में कमला और इलाइची के नाम मिलते हैं।
- वल्लभ महांति द्वारा बनाए गए यशोदा माता, नंद, बालकृष्ण और ग्वालों के चित्र नाथद्वारा शैली के प्रसिद्ध चित्र हैं।
- मुख्य रंग: हरा और पीला
- इस शैली का कार्य मुख्यतः *जांगिड़/गौड़ ब्राह्मण* परिवारों द्वारा किया गया।

**3) देवगढ शैली**

- देवगढ़ ठिकाना की स्थापना महाराणा जय सिंह के शासनकाल में द्वारकाधीश/द्वारकादास चुंडावत द्वारा की गई थी।
- मुख्य विषय: राजसी जीवन, श्रृंगार और प्राकृतिक दृश्य।
- प्रमुख चित्रकार: कंवला, चौखा, बैजनाथ, हरचंद, नंगा, बागटा आदि।
- मुख्य रंग: पीले रंग का प्रमुखता
- विशेष तथ्य: यह शैली मारवाड़, जयपुर और मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- भित्ति चित्र: औजार की ओवारी और मोती महल (इनका निर्माण द्वारकादास चुंडावत द्वारा करवाया गया)।
- प्रकाशन: इस शैली का पहला प्रकाशन डॉ. श्रीधर आंधारे ने किया।

**4) चावंड शैली**

- प्रमुख शासक: महाराणा प्रताप (विकसित) और महाराजा अमरसिंह (स्वर्ण युग)।
- प्रमुख चित्रकार: नसीरुद्दीन (निसारदीन)
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ: 'रागमाला' (1605 ई.) अमरसिंह के काल में
- रागमाला: 1605 ई. में अमरसिंह के शासनकाल में चावंड शैली में 'रागमाला' के चित्र नसीरुद्दीन द्वारा बनाए गए।

## <u>मारवाड़ शैली</u>

- इतिहास: तिब्बती इतिहासकार लामा तारनाथ ने 7वीं सदी में मरू देश के चित्रकार श्रींगधर का उल्लेख किया, जिन्होंने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली की स्थापना की।
- प्राचीन अवशेष: प्रतिहार काल के औध निर्युक्ति वृत्ति में इस शैली के प्राचीन अवशेष मिलते हैं।

**प्रमुख उपशैलियाँ**

**1) जोधपुर शैली**

- प्रमुख शासक: महाराजा जसवंत सिंह और महाराजा मानसिंह
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ: 'सुरसागर' पर आधारित 'दुर्गा सप्तरणी' और 'रसिकप्रिया'
- प्रमुख चित्रकार: अमर दास भाटी, दाना भाटी, शंकर दास, नारायणदास, बिशनदास, शिवदास, रतनजी भाटी, देवदास, कालू, छोटू, नाथा, रामा, जीतमल, किसनदास आदि।
- चित्रकृत भवन: चोखेला महल (जोधपुर)।
- मुख्य रंग: चमकीला पीला और लाख के लाल रंग की प्रबलता
- विभिन्न शासकों के द्वारा विकास:-
  - ✓ जसवंत सिंह के समय चित्रों पर मुगल प्रभाव
  - ✓ अभय सिंह के समय: सामंती संस्कृति का चित्रण
  - ✓ मानसिंह के समय: मारवाड़ की चित्रकला अपने शिखर पर पहुँची
- प्रमुख चित्र: ढोला-मारू, ढोला मरवण री बात।
- अन्य चित्रण: जेठवा-उजली, मुमलदे-निहालदे, वेली किसन रुकमणी री, छोटी झोपड़ियां, नाथ चरित्र पंचतंत्र, रूपमती-बाज बहादुर, मारू के टीले।
- मारवाड़ चित्रकला शैली पंचतंत्र चित्रकला के लिए जानी जाती है।

| |
|---|
| **नोट - रागमाला-चित्रावली** 1632 ई. में राजा गज सिंह प्रथम के समय वीरजी ने पाली के वीर पुरुष विठ्ठल दास चंपावत के लिए रागमाला चित्र बनाए। |

**2) बीकानेर उप-शैली**

- प्रमुख शासक: महाराजा अनूप सिंह (स्वर्ण काल) उनके समय के प्रसिद्ध कलाकारों में रामलाल, अलिराजा, हसन आदि के नाम शामिल हैं।
- दक्षिणी (डेक्कन) शैली का प्रभाव: यहाँ के फव्वारों, दरबार के दृश्यों आदि पर दक्षिणी शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ और विषय: रसिक प्रिया, बारहमासा, रागरागिनी, कृष्ण लीला, शिकार और राजसी जीवन
- मुख्य रंग: पीला
- प्रमुख चित्रकार:
  - ✓ उस्ता कलाकार: मुराद, हमीद, रुकनुद्दीन, अलिराजा, उस्ता असीर खान (मूलतः *ईरान* से; ऊँट की काठी पर नक़्क़ाशी करने में निपुण। *रायसिंह* इन्हें *लाहौर* से बीकानेर लाए थे।)
  - ✓ मथेरण परिवार के कलाकार: रामलाल, नाथू, चंदूलाल, मुन्नालाल, मुकुंद
- इस शैली के विकास में मथेरण और उस्ता कलाकारों ने योगदान दिया
- विशेष तथ्य: इस शैली का प्रारंभिक चित्रण महाराजा रायसिंह के समय में चित्रित 'भागवत पुराण' पुस्तक में देखने को मिलता है।
- प्रसिद्ध चित्रकार: महाराजा रायसिंह के समय में उस्ता अलिराजा और उस्ता हमीद रुकनुद्दीन मुख्य चित्रकार थे।
- इस शैली पर मुगल, जैन और दक्षिणी शैली का प्रभाव देखा जा सकता है।
- नूर मोहम्मद (महाराजा राय सिंह के दरबारी चित्रकार) ने ‘रागमाला’ नामक चित्र बनाया।
- भागवत पुराण को बीकानेर शैली का पहला चित्रित ग्रंथ माना जाता है।
- जर्मन चित्रकार ए.एच. मुलर द्वारा बनाए गए यथार्थवादी चित्र बीकानेर के सरकारी संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

**3) किशनगढ़ उप-शैली**

- किशनगढ़ के शाही परिवार वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे, इसलिए राधा-कृष्ण की लीलाएँ इस शैली का मुख्य विषय बनीं।
- संरक्षक: किशनगढ़ चित्रकला शैली के संरक्षक सवाई सिंह थे, (जो नागरीदास (1748–64) के नाम से भी प्रसिद्ध थे) जिनका निधन वृंदावन में हुआ था।
- विशेष तथ्य: इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय विद्वान एरिक डिक्सन और डॉ. फयाज़ अली को जाता है।
- प्रमुख चित्रकार: मोरध्वज निहालचंद, सुरध्वज, , भंवरलाल, लाडडलीदास, छोटू, अमीरचंद, धन्ना, नानकराम, सीताराम, मुलराज, बदन सिंह।
- दोविशिष्ट विशेषताएं: व्यक्तिवादी चेहरे का प्रकार और धार्मिक तीव्रता
- मुख्य रंग: सफेद और गुलाबी
- मुख्य विशेषता: 'महिला सौंदर्य'
- कांगड़ा शैली और ब्रज साहित्य का प्रभाव।
- प्रसिद्ध चित्रकला- 'बनी-ठनी' जो कि निहालचंद द्वारा बनाई गई, जिसे एरिक डिक्सन द्वारा "भारत की मोना लिसा" कहा ।
- 1973 में, अमीरचंद द्वारा बनाई गई एक चित्रकला, "चाँदनी रात की संगोष्ठी", जो सावंत सिंह के शासनकाल में बनाई गई थी, को भारतीय डाक टिकट पर प्रकाशित किया गया।
- रचना: **सावंत** सिंह ने बिहारी चंद्रिका रत्नावली, रसिक रत्नावली और मनोरथ मंजरी जैसी कविताएँ भी रचीं।
- भित्ति चित्र और रागरागिनी चित्रण इस शैली में उपलब्ध नहीं हैं।

**4) अजमेर उप-शैली**

- प्रसिद्ध चित्र: 1698 में 'राजा पाबूजी' का चित्र, जिसे जूनियाँ के चाँद ने बनाया, इस शैली का सुंदर उदाहरण है।
- विशेषता: यह एकमात्र ऐसी चित्रकला थी जिसे हिंदू, मुस्लिम और ईसाई धर्मों का समान संरक्षण मिला।
- प्रमुख चित्रकार: चंद, नबला, तैयाब, रायसिंह, *रामसिंह भाटी*, लालजी, नारायण भाटी और महिला चित्रकार साहिबा एवं उसना।
- मुख्य रंग: सुखद रंग योजना (लाल, पीला, हरा, नीला और विशेष रूप से बैंगनी रंग का प्रयोग)

**5) जैसलमेर उप-शैली**

- विशेषता: जैसलमेर शैली की एक विशेषता यह है कि यह मुगल या जोधपुर शैली से प्रभावित नहीं है।
- प्रमुख शासक: महारावल हरराज, अखे सिंह और मुलराज
- मुख्य चित्र: मूमल

**6) नागौर उप-शैली**

- मारवाड़ शैली का प्रभाव: नागौर उप-शैली में किले के काष्ठनिर्मित दरवाजों और भित्ति चित्रों पर मारवाड़ शैली का प्रभाव देखा जा सकता है।
- विशेष चित्रण: वृद्धावस्था के चित्र और पारदर्शी वस्त्र
- राजा बख्त सिंह के समय नागौर किले में भित्ति चित्रों की सजावट।

**7) घाणेराव शैली**

- स्थान: जोधपुर के दक्षिण में स्थित गोडवाड़ का एक प्रमुख ठिकाना।
- प्रमुख चित्रकार: नारायण, छज्जू और कृपाराम ने इस शैली में नई चित्रकला शैली का विकास किया।

## ढूंढाड़ शैली

यह शैली केवल जयपुर शहर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके आसपास के शहरों में भी विस्तारित है।

**प्रमुख उपशैलियाँ**

**1) जयपुर शैली**

- मुगल चित्रकला से सर्वाधिक प्रभावित।
- महाराजा सवाई जय सिंह I –
  - ✓ महाराजा सवाई जय सिंह प्रथम के समय जयपुर चित्रकला शैली की शुरूआत हुई।

| |
|---|
| **नोट** :- यहां चित्रकार चित्र बनाते थे। सवाई ईश्वरी सिंह के समय में यह केंद्र ('सूरतखाना') आमेर से जयपुर स्थानांतरित हुआ। |

  - ✓ '36 कारखानों' की स्थापना: उन्होंने अपने शाही प्रतीकों, खजानों और रोजमर्रा की वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए '36 कारखानों' की स्थापना की, जिनमें से एक 'सूरतखाना' था,
  - ✓ प्रमुख रचनाएँ: इस काल में 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया', 'गीत-गोविंद', 'बारहमासा', 'नवरस' और 'रागमाला' जैसी रचनाएँ बनाई गईं।
- महाराजा ईश्वरी सिंह साहिबराम ने ईश्वरी सिंह के समय में आदमकद चित्र बनाकर चित्रकला में नई परंपरा का आरंभ किया, जबकि लालचंद ने कई पशु (विशेषकर हाथियों) युद्धों का चित्रण किया।

| |
|---|
| **Note:** |
| ➢ लाल चितेरा महाराजा सवाई ईश्वर सिंह और महाराजा सवाई माधो सिंह के शासनकाल के दौरान एक प्रमुख चित्रकार थे। |

- सवाई माधो सिंह प्रथम के समय, कलाकारों ने चित्रों में रंगों की जगह मोती, लाख और लकड़ी के मोतियों का प्रयोग कर 'मणि-कुट्टिम' की परंपरा को बढ़ावा दिया।
- सवाई प्रताप सिंह का काल **(1778–1803 ई.)**: स्वर्ण युग - रामसेवक, गोपाल, हाकमा, चिमना, सालिग्राम, लक्ष्मण , हीरानंद, त्रिलोक, रामजीदास, गोपाल, रामसेवक, मुहम्मद शाह, रघुनाथ, घासीराम जैसे चित्रकारों का उल्लेख मिलता है।
- 'महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स': महाराजा सवाई राम सिंह ने 1857 में इस विद्यालय की स्थापना की, जिसे अब 'राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स' के नाम से जाना जाता है।
- आलागिला विधि: राजस्थान में पहली बार आमेर में आलागिला विधि का प्रयोग किया गया, जो कछवाहा-मुगल संबंधों के प्रभाव का परिणाम थी।
- सवाई प्रताप सिंह का काल जयपुर चित्रकला शैली का स्वर्णिम काल माना जाता है।
- प्रभावित क्षेत्र: इस शैली का असर ईसरदा, सिवाड़, झिलाय, उनीयारा, चोमू, सामोद और मालपुरा जैसे ठिकानों पर भी पड़ा।
- मुख्य रंग: केसरिया, पीला, हरा और लाल, साथ ही चांदी, सोना, जिंक और मोती का उपयोग।
- विशेषताएँ – हिंदू देवी-देवताओं को यूरोपीय कुर्सियों पर बैठा दिखाया गया है, एक महिला को फकीरों को भिक्षा देते हुए, एक राजकुमारी को कुरान पढ़ते हुए, चेहरे पर चोट या चेचक के दागों वाले पुरुषों का चित्रण आदि इस शैली की विशिष्ट झलकियाँ हैं।

**2) अलवर उप-शैली**

- यह शैली ईरानी, मुगल और जयपुरी शैलियों का मिश्रण है।
- राव राजा प्रताप सिंह -
  - ✓ स्वतंत्र अस्तित्व: राव राजा प्रताप सिंह के समय 1775 में यह शैली जयपुर से अलग होकर स्वतंत्र अस्तित्व में आई।
  - ✓ प्रमुख कलाकार: राव राजा प्रताप सिंह के शासनकाल में शिवकुमार और डालूराम नामक चित्रकार जयपुर से अलवर आए।
  - ✓ 'शीशमहल' के भित्ति चित्र: राजगढ़ किले के शीशमहल में भित्ति चित्र उनके समय में बनाए गए।
- बख्तावर सिंह –
  - ✓ चित्रकला का आरंभ - (राजगढ़ के महलों में शीशमहल को चित्रित करके)।
  - ✓ प्रमुख चित्रकार: गुलाम अली, रामगोपाल, बलदेव, डालूराम , सालगा और सालिग्राम।

➢ विनय सिंह (स्वर्ण काल) का योगदान:
  ✓ अलवर चित्रकला के विकास में उनका स्थान मुगल चित्रकला में अकबर के बराबर माना जाता है।
  ✓ स्थानीय कलात्मक संस्कृति को आकार देने और अलवर की अनूठी शैली को उभारने में उनका योगदान महत्वपूर्ण था।
  ✓ 'गुलिस्तान' की सुलेख और पेंटिंग उनके शासनकाल की एक अनूठी घटना है।
➢ बलवंत सिंह का समय: सालीग्राम, जमनादास, छोटालाल, बक्साराम, नंदराम जैसे कलाकारों ने पोथी चित्रण, लघु चित्र और लिपटवान पट्टचित्र बनाए
➢ शिवदान सिंह का काल: इस काल में सैकड़ों चित्र बनाए गए जो प्रेम भावनाओं का चित्रण करते हैं, जैसे 'नफीरी वादन'।
➢ महाराजा मंगलसिंह का समय: मूलचंद और उदयराम ने हाथीदांत के पैनलों पर सूक्ष्म चित्र बनाए।
➢ मुख्य ग्रंथ और विषय: 'चंडी पाठ' और 'दुर्गा सप्तशती', साथ ही कृष्ण चरित्र, रामचरित्र, दरबार, संगीत और नायिकाएँ तथा मुख्य विषय- योगासन।
➢ प्रमुख चित्रकार: डालचंद, नांगराम, बलदेव, बुधराम, गुलाम अली और सालगा
➢ मुख्य रंग: हरा, नीला और सुनहरा रंग

3) **आमेर शैली**

➢ प्रारंभिक चित्रित ग्रंथ: यशोधरा चरित्र (1591 ईस्वी) इस शैली के प्रारंभिक चित्रित ग्रंथों में से एक है।
➢ रज्मनामा की प्रतिलिपि: 1588 ईस्वी में बनी रज्मनामा की प्रतिलिपि आमेर के सूरतखाना में अकबर के लिए तैयार की गई।
➢ दूसरा प्रमुख चरण: आमेर चित्रकला शैली का दूसरा प्रमुख चरण मिर्जा राजा जयसिंह (1621-1667 ईस्वी) के शासनकाल से शुरू हुआ
  ✓ चित्रकला का संरक्षण: 1639 ईस्वी में मिर्जा राजा जयसिंह ने अपनी रानी चंद्रावती के लिए 'रसिकप्रिया' और 'वेली कृष्ण रुक्मणि री' जैसी रचनाओं का निर्माण करवाया।
  ✓ आमेर में ही मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई. में गणेश पोल का निर्माण करवाया, जिसे भित्तिचित्रों और आभूषणों से सजाया गया है।
➢ प्रमुख शासक: मानसिंह और मिर्जा राजा जयसिंह।
➢ प्रमुख ग्रंथ और विषय: आदिपुराण, रज्मनामा, भागवत, यशोधरा चरित्र और बिहारी सतसई पर आधारित चित्र।
➢ प्रमुख चित्रकार: हुकमचंद, मन्नालाल, पुष्पदत्त और मुरली
➢ मुख्य रंग: प्राकृतिक रंगों का प्रयोग जैसे कालूस, सफेदा, हिर्मिच, गेरू और खड़ी।
➢ विशेष तथ्य: इस शैली पर मुगल शैली का अधिकतम प्रभाव है।
➢ बहादुर शाह (मुआज्जम) ने जनवरी 1708 में, आमेर का नाम बदलकर **'मोमिनाबाद'** रख दिया था।

**4) उनियारा उप-शैली**

➢ उनियारा शैली पर बूंदी और जयपुर का समन्वित प्रभाव दिखाई देता है।
➢ विकास का मार्ग: नारुका वंश के संरक्षण से इस शैली का विकास हुआ।
➢ राव राजा सरदार सिंह ने धिमा, मीर बख्श, काशी, रामलखन और भीम जैसे कलाकारों को संरक्षण दिया।
➢ प्रमुख चित्र: मीर बख्श द्वारा उनियारा शैली में 'राम-सीता, लक्ष्मण और हनुमान' का सुंदर चित्रण।

## <u>हाड़ौती स्कूल</u>

प्रमुख क्षेत्र: राजस्थान का बूंदी, कोटा और झालावाड़ क्षेत्र चौहान वंश के हाड़ा समुदाय द्वारा शासित था, इसलिए इसे हाड़ौती क्षेत्र कहा जाता है।

**प्रमुख उप शैलियाँ**

**1) कोटा शैली**

- अधिकांश चित्र 'महाराव उम्मेद सिंह प्रथम' (स्वर्ण युग, शिकार दृश्यों की विशेषता) की अवधि के दौरान बनाए गए थे।
- प्रमुख चित्रित ग्रंथ और विषय: भागवत पुराण, ढोला-मारू, दरबार दृश्य, शिकार और विशेषतः महिलाओं द्वारा शिकार करने के दृश्य, हाथियों की लड़ाई, बारहमासा, राग-रागिनियाँ।
- प्रमुख चित्रकार: डालू, लच्छीराम, नूर मोहम्मद, रघुनाथ, हेमराज जोशी, गोविंदराम।
- मुख्य रंग: हल्के रंग, पीला और नीला।
- विशेष आकर्षण: यहाँ की झाला हवेलियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र हैं।
- 1768 ई. में डालूराम नामक चित्रकार द्वारा निर्मित रागमाला सेट कोटा चित्रकला का सबसे बड़ा चित्र है। (महाराव गुमान सिंह के समय)

**2) बूंदी शैली**

- ईरानी, दक्षिणी, मराठा और मेवाड़ शैलियों से प्रभावित।
- बूंदी चित्रकला मेवाड़ चित्रकला से प्रभावित रही है।
- विकास: राव शत्रुशाल (छत्रसाल) के शासनकाल में विकसित हुई, उन्होंने रंगमहल का निर्माण करवाया जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रमुख चित्रण: राव भाव सिंह की मुग़ल सम्राटो के दक्कन अभियान में भाग लेने के कारण बूंदी चित्रों पर दक्कन शैली का प्रभाव दिखता है।
- **बर्ड शैली / पशु-पक्षी चित्रण** – इस शैली में पक्षियों और जानवरों का चित्रण किया जाता है, जिनमें कबूतर और बतख सबसे अधिक चित्रित किए जाते हैं।
- नाचता हुआ मोर केवल इसी शैली में चित्रित किया गया है।
- प्रमुख ग्रंथ और विषय: राग रागिनी, नायिका भेद, बारहमासा, रसिकप्रिया, सामंती वातावरण का चित्रण, शिकार, हाथियों की लड़ाई।
- मुख्य रंग: हरा
- प्रमुख चित्रकार: सुर्जन, अहमद अली, रामलाल, श्रीकिशन, डालू, भीकराज और साधुराम।
- चित्रशाला - राजप्रसाद (बूंदी किला), निर्माण – 1749-73 ई. में महाराव उमेद सिंह द्वारा।
- मुख्य रूप से झील, केले और खजूर के पेड़ों का चित्रण।
- जहाँगीर ने चित्रकला के प्रति प्रेम के कारण राव रतन सिंह को सर बुलंदराय की उपाधि दी थी

**3) झालावाड़ शैली**

- प्रमुख चित्रण: श्रीनाथजी, राधाकृष्ण लीला, रामलीला, राजसी वैभव आदि का चित्रण यहाँ के महलों की दीवारों पर देखने को मिलता है।

**4) दुगारी शैली**

- चित्रशाला: बूँदी के नैनवा के पास सीताराम मंदिर की चित्रशाला में इस शैली का विकास।
- स्वर्णकलम का उपयोग: चित्रों में स्वर्णकलम का उपयोग, भगवान राम पर केंद्रित चित्र प्रमुख।
- प्रमुख चित्र: मत्स्यावतार और कश्यपावतार।

Unleash the topper in you

# राजस्थान की लोक कला

- लोक कला का अर्थ: जब साधारण व्यक्ति अपने कला कौशल को बिना किसी विशेष प्रदर्शन के चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि के रूप में प्रस्तुत करता है, तो उसे लोक कला कहते हैं।
- लोक कला का महत्व: लोक कला ही संस्कृति की असली वाहक और प्रस्तुतकर्ता होती है।

## राजस्थान की प्रमुख लोक कलाएँ

**1) सांझी**

- समय: दशहरे से पहले श्राद्ध पक्ष में बनाई जाती है।
- विधि: अविवाहित लड़कियाँ पंद्रह दिन तक गोबर से सफेद की गई दीवारों पर आकृतियाँ बनाकर सांझीकी पूजा करती हैं। इसे सांझी, संझुली, सिंझी, सींझ के हंजी, हंज्या आदि नामों से भी जाना जाता है।
- सांझी को माता पार्वती का रूप मानकर कन्याएं अच्छे वर और घर के लिए पूजा करती हैं।
- प्रक्रिया: पहले दिन से दसवें दिन तक एक या दो प्रतीक बनाए जाते हैं, लेकिन अंतिम पाँच दिनों में बड़ा सांझया कोट बनाया जाता है।

**2) मांडना**

- उद्देश्य: दीवारों की सजावट के लिए बनाया जाता है।
- स्थान: घर के दरवाजे की चौखट, आंगन, चौक, चबूतरा, मटके रखने की जगह, पूजा स्थल आदि पर।
- प्रतीक: विवाह पर गणेशजी, लक्ष्मी जी के पग, स्वास्तिक आदि, साथ ही बच्चों के जन्म पर चौक, मोर, कलश, कलियाँ, बंदनवार बनाए जाते हैं।
- विशेष अवसर: तीर्थ यात्रा से सुरक्षित लौटने पर 'पुष्कर पेड़ी' और 'पथवारी' बनाए जाते हैं।

**3) फड़**

- भीलवाड़ा के शाहपुरा कस्बे में चित्रकला छीपा जाति के जोशी चित्रकारों द्वारा की जाती है, जिसे राजस्थानी भाषा में 'फड़' कहा जाता है।
- प्रसिद्ध कलाकार: भीलवाड़ा के श्रीलाल जोशी इस शैली के मुख्य चित्रकार हैं।
- उपयोग: फड़ भोपों के लिए बनाया जाता है, जो इसे लकड़ी पर लपेटकर गाँव-गाँव जाकर पारंपरिक वेशभूषा में रावणहत्था या जन्तर वाद्य के सुरों पर नाचते हैं।
- विशेषता: यह लोक रंगमंच, गायन, संगीत, मौखिक साहित्य, चित्रकला और लोक धर्म का अनोखा मिश्रण है।
- रंगों का प्रतीकात्मक उपयोग: देवी नीली, देवता लाल, राक्षस काले, ऋषि सफेद या पीले, और वीरता का प्रतीक सिंदूरी और लाल रंग।
- देवनारायण जी की फड़: यह गुर्जर भोपों द्वारा गाया जाने वाला सबसे लंबा गीत है।

**4) पाने**

- विवरण: राजस्थान में विभिन्न त्योहारों पर देवी-देवताओं के कागज पर बने चित्र (पाने) बनाए जाते हैं।
- प्रचलित देवी-देवता: गणेशजी, लक्ष्मीजी, रामदेवजी, गोगाजी, श्रवण कुमार, तेजाजी, राम, कृष्ण, शिव-पार्वती, धर्मराज, देवनारायणजी, श्रीनाथजी, नृसिंह आदि।
- श्रीनाथजी का पाना: इसमें चौबीस श्रृंगार चित्रित किए गए हैं, जो सबसे कलात्मक माना जाता है।

## 5) कावड़

- यह चित्तौड़गढ़ जिले के बासी गाँव के खैराड़ी समुदाय का पारंपरिक कार्य है।
- प्रसिद्ध कलाकार: यहाँ के परंपरागत कलाकार मांगीलाल मिस्त्री ने इस कावड़-परंपरा को संरक्षित रखते हुए कई नए प्रयोग किए।
- विवरण: यह एक मंदिर जैसी लकड़ी की संरचना है, जिसमें लोगों की धार्मिक आस्थाएँ और विश्वास जुड़े होते हैं।

## 6) गोदल्या

- उद्देश्य: चोरी हुए जानवरों की पहचान या सामान्य पहचान के लिए उनके शरीर पर आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इस प्रक्रिया को अटरना और इन धब्बों को गोदल्या कहते हैं।
- प्रतीक: ये चिह्न कभी किसी विशेष जाति, क्षेत्र या किसी विशेष शाही परिवार के प्रतीक होते हैं।

## 7) मेहंदी

- प्रसिद्धि: मारवाड़ में सोजत और मालवा की मेहंदी बहुत प्रसिद्ध है।
- प्रयोग: विवाह, सगाई, संतान जन्म, पूजा और शुभ कार्यों में महिलाएँ इसे लगाती हैं।
- प्रतीक: इसमें दीपावली पर पान के पत्ते, हठड़ी की भाँट, शंख, लक्ष्मी जी के पग चित्रित किए जाते हैं।

**Note:-** सोजत की मेहंदी को GI टैग मिला है।

## 8) गोदना

- विवरण: शरीर पर धारदार उपकरण से त्वचा को काटकर उस पर काला रंग भरने से स्थायी निशान बनाए जाते हैं, जिन्हें गोदना कहते हैं। यह आदिवासियों में लोकप्रिय है।
- प्रतीक: इसमें राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, स्वास्तिक, कलश, ओम, त्रिशूल, पशु-पक्षी, फूल-पत्ते और दैनिक जीवन की वस्तुओं के प्रतीक बनाए जाते हैं।

## 9) कोठियाँ

- उपयोग: ग्रामीण क्षेत्रों में भंडारण के लिए कलात्मक कोठियाँ बनाई जाती हैं।
- संरचना: ये मिट्टी और विभिन्न प्रकार की जाली, छिद्र, मोल्डिंग आदि से बनाई जाती हैं, जिन पर देवी-देवताओं, जीव-जंतुओं, लताओं और मांडनों का चित्रण किया जाता है।
- भंडारण: इनमें अनाज के अलावा घी, दूध, दही जैसी दैनिक उपयोग की चीजें रखी जाती हैं।

## 10) वील

- प्रसिद्धि: पश्चिमी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय।
- विधि: इसे पतली बाँस की छड़ियों को घोड़े की लीद के साथ गूंथकर तैयार किया जाता है।
- सजावट: इसे सुंदर बनाने के लिए छोटे छेद, जाली और कंघी के आकार के पैटर्न बनाए जाते हैं और छोटे-छोटे दर्पण चिपकाए जाते हैं।

## 11) कठपुतली/पपेट्री

- प्रसिद्धि: उदयपुर में विशेष रूप से प्रसिद्ध
- विवरण: लकड़ी की कठपुतलियों को धागों की सहायता से नचाया जाता है।
- शैली: धागापुतली शैली राजस्थान की देन मानी जाती है।
- प्रमुख नाटक: कठपुतलियों के माध्यम से 'सिंहासन बत्तीसी', 'पृथ्वीराज-संयोगिता' और 'अमर सिंह राठौड़' जैसे नाटक हर गाँव और घर में प्रस्तुत किए गए हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय मान्यता: 1965 में रोमानिया में तीसरे अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली महोत्सव में, उदयपुर के भारतीय लोक कला मंडल के कलाकारों ने राजस्थान की इस कला में प्रथम पुरस्कार जीता।

ToppersNotes Unleash the topper in you

# 2 CHAPTER राजस्थान के हस्तशिल्प

| | |
|---|---|
| प्रश्न.1 | रूमा देवी के बारे में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है? (2021)<br>(1) उन्हें हस्तशिल्प के क्षेत्र में जाना जाता है।<br>(2) वे जसरापुर (खेतड़ी) गाँव में पली बढ़ी।<br>(3) उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा 2018 में 'नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।<br>(4) उन्होंने हजारों महिलाओं को रोजगार बढ़ावा देने में अहम भागीदारी निभाई। |

**विश्लेषण** – राजस्थानी हस्तशिल्प पर प्रश्न अक्सर विशेष शिल्पों की पहचान, शैलियों की तुलना, और उनके ऐतिहासिक महत्व या GI टैग पर केंद्रित होते हैं। इस अध्याय को छात्रों की आसान समझ के लिए स्पष्ट और व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया है, जिसमें विभिन्न प्रकार के राजस्थानी हस्तशिल्प, उनकी उत्पत्ति और प्रसिद्ध कलाकारों को उजागर किया गया है। इसमें आकर्षक दृश्यमान उदाहरण भी शामिल हैं और प्रत्येक शिल्प की सांस्कृतिक महत्ता और विशेषताओं पर जोर दिया गया है, जिससे छात्रों के लिए इन हस्तशिल्पों की विशिष्टता और महत्व को समझना सरल हो जाता है।

## राजस्थान में मूर्तिकला

राजस्थान में मूर्तिकला की शुरुआत मौर्य काल में हुई थी तथा जयपुर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

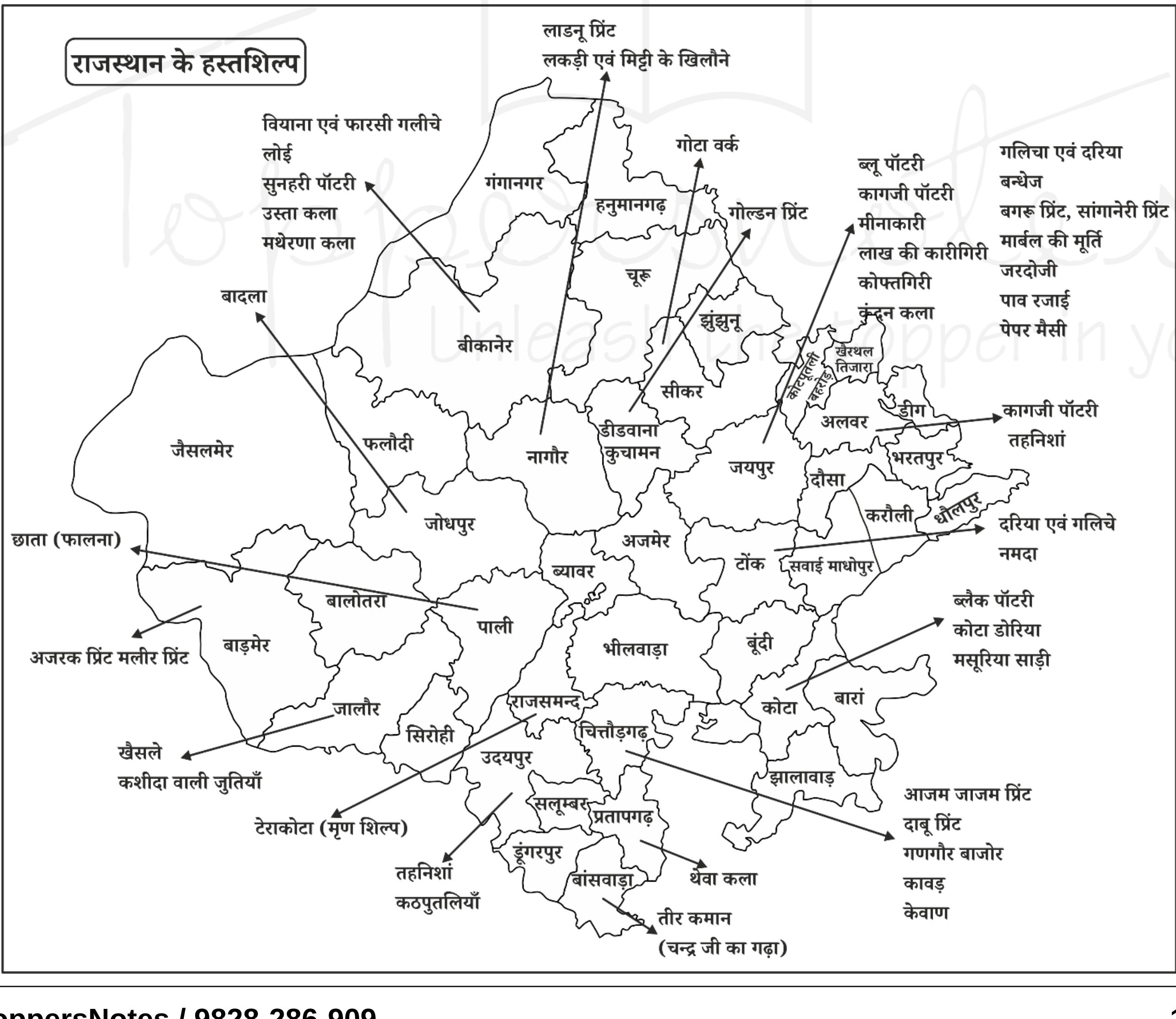

## पत्थर की मूर्तियां

- डूंगरपुर और तलवाड़ा (बांसवाड़ा में) **सोमपुरा जाति द्वारा** तैयार की गई पत्थर की मूर्तियों के लिए जाने जाते हैं।
  - ✓ उल्लेखनीय कार्य - तलवाड़ा मूर्तिकला
- बेवाण मंदिर लकड़ी से बना एक 'देव विमान' है, जिसे झुलनी एकादशी के दौरान तैराया जाता है।

## टेराकोटा (मोलेला, राजसमन्द)

- यह पकी हुई मिट्टी का उपयोग करके मूर्तियां और वस्तुएं बनाने की कला है।
- मोलेला और हरजी में कुम्हार मूर्तियाँ बनाने के लिए गधे के गोबर के साथ मिश्रित मिट्टी का उपयोग करते हैं और इसे उच्च तापमान पर पकाते हैं।
- प्रसिद्ध क्षेत्र-
  - ✓ नाथद्वारा के पास स्थित मोलेला, अपने टेराकोटा खिलौनों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
  - ✓ हरजी गाँव, जालौर - मामाजी के घोड़ों के लिए प्रसिद्ध।
  - ✓ नागौर का बू और बाणुरावता गांव - टेराकोटा के बर्तनों और खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रसिद्ध कलाकार: मोलेला के मोहनलाल (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता), खेमराज, रामगढ़ (अलवर) के ओमप्रकाश गालव, जो मिट्टी के बर्तन (मृत्तिका कला) के कलाकार हैं ।

## ब्लू पॉटरी (जयपुर)

- इसे कामचीनी के नाम से भी जाना जाता है। इसमें कोबाल्ट ऑक्साइड (नीला रंग) की प्रधानता होती है।
- ब्लू पॉटरी (नीली मिट्टी) की कारीगरी जयपुर में मान सिंह प्रथम के समय लाहौर से आई थी। यह मूलतः फारसी कला का एक रूप है।
- बाद में महाराजा राम सिंह (1835-80 ई.) ने जयपुर में इसका विकास करवाया। उन्होंने चूड़ामन और कालू कुम्हार को मिट्टी का काम सीखने के लिए दिल्ली भेजा।
- बाद में कृपाल सिंह शेखावत ने इस कला को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।
- यह कला तुर्कों और मुगलों के साथ भारत में आई लेकिन 1950 तक लगभग लुप्त हो गई थी।
- स्वतंत्रता के बाद, कृपाल सिंह शेखावत के प्रयासों से इसका पुनरुद्धार हुआ और उन्हें 1974 में पद्मश्री और 2000 में शिल्प गुरु से सम्मानित किया गया।
- वर्तमान प्रमुख कलाकार - गोपाल सेन, त्रिलोकचंद, भगवान सहाय, दुर्गालाल और हनुमान सहाय तथा महिला कलाकार नाथीबाई।

**नोट:**
- ब्लैक पॉटरी - कोटा
- पेपर पॉटरी - अलवर और जयपुर
- गोल्डन पॉटरी - बीकानेर

## हाथी दांत हस्तशिल्प (उदयपुर)

- विभिन्न वस्तुओं - आभूषण, पाउडर बॉक्स, आभूषण बॉक्स, कफ़लिंक लैंप, सजावटी सामान, मूर्तियाँ और ब्रोच।
- प्रसिद्ध केंद्र- उदयपुर (सबसे प्रसिद्ध), जोधपुर काली, हरी और लाल धारियों वाली चूड़ियों के लिए जाना जाता है।

## मीनाकारी (जयपुर)

- मानसिंह प्रथम (1589-1614) द्वारा शुरू की गई , जो लाहौर से मीनाकारी कला लाए थे। ऐसा माना जाता है कि यह मूलत: फारस/ईरान से है।
- इसमें कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों तथा सोने-चांदी के आभूषणों पर फूल, पत्तियां और मोर की आकृतियां बनाई जाती है ।

- कुदरत सिंह, हरिसिंह, अभरसिंह, किशनसिंह, गोभसिंह, दुर्गा सिंह और श्यामसिंह प्रमुख कलाकार थे।
- प्रसिद्ध कलाकार - कुदरत सिंह, जिन्हें 1988 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।
- मीनाकारी के प्रकार –

| | |
|---|---|
| पीतल पर (मुरादाबादी कार्य) | जयपुर और अलवर |
| संगमरमर पर | जयपुर |
| कागज़ के पतले पत्थर पर | बीकानेर |
| विभिन्न रंगों वाले कांच पर | कोटा का रेतवाली क्षेत्र |
| चाँदी के आभूषणों पर | नाथद्वारा और जयपुर |
| तांबे पर | भीलवाड़ा |

## बादला (जोधपुर)

- रेगिस्तान में पानी को ठंडा रखने के लिए कपड़े या चमड़े की परत से ढका हुआ जस्ता का बर्तन ' **बादला** ' कहलाता है।
- जोधपुर में बने बादले प्रसिद्ध हैं।

## उस्ता कला (बीकानेर)

- बीकानेर के महाराजा अनूप सिंह के शासनकाल में उस्ता परिवारों ने हिंदू पौराणिक कथाओं और राजस्थानी विषयों पर आधारित सैकड़ों चित्र बनाए।
- ऊँट की खाल पर सोने की मीनाकारी तथा मुनव्वत का काम '**उस्ता**कला' के नाम से जाना जाता है।
- बीकानेर के हिसामुद्दीन उस्ता (पद्मश्री से सम्मानित - 1986) और मोहम्मद हनीफ द्वारा विकसित।
- बीकानेर का 'ऊंट खाल प्रशिक्षण केंद्र' **उस्ता**कला का प्रशिक्षण देता है।

## लाख का कार्य

- जयपुर एवं जोधपुर में प्रसिद्ध।
- सवाई माधोपुर, लक्ष्मणगढ़ (सीकर), इन्द्रगढ़ (बूंदी) लकड़ी के खिलौनों पर लाख के काम के लिए जाने जाते हैं।
- लाख की चूड़ियाँ जयपुर, हिण्डौन और करौली में तैयार की जाती हैं।

## थेवा कला (प्रतापगढ़)

- रंगीन बेल्जियन कांच पर सोने की मीनाकारी को 'थेवा कला' कहा जाता है।
- इसके कारीगरों को 'पन्नीगर' कहा जाता है, जो मुख्य रूप से प्रतापगढ़ के 'राज सोनी' परिवार से हैं। इस कार्य को 'पन्निगरी' कहा जाता है।
- यह विश्व में केवल प्रतापगढ़ जिले तक ही सीमित है।
- "थरना" उस जटिल, बारीक जालीदार डिज़ाइन को कहा जाता है, जो बहुत पतली सोने की परतों से बनाई जाती है और जिसे रंगीन काँच पर चिपकाया जाता है।
- प्रमुख कलाकार-महेश सोनी, रामप्रसाद सोनी, राम विलास सोनी, बेनीराम सोनी, जगदीश सोनी आदि।

## कोफ्तगिरी

- स्टील/लोहे पर सोने की महीन कढ़ाई को "कोफ्तगिरी" कहा जाता है।
- यह हथियारों को सजाने की कला है, जो मुगलों के प्रभाव में भारत में प्रारम्भ हुई ।
- इसका उपयोग ढाल, तलवार, खंजर और अन्य उपयोगी वस्तुओं जैसे डिब्बे, बक्से, कटलरी, चाकू आदि के निर्माण के लिए किया जाता है।
- इस कला पर उदयपुर, जयपुर, चित्तौड़गढ़ और अलवर में बहुतायत से कार्य  किया जाता हैं।

## तहनिशाँ

- इस कला में सतह पर गहरे डिजाइनों को उकेरना और उन्हें पतले तार से जड़ना शामिल है।
- अलवर के तलवार साज कारीगरों और उदयपुर के सिकलीगर कारीगरों द्वारा अभ्यास किया जाता है।

## कुन्दन कला(जयपुर)

- आभूषणों में पत्थर जड़ने की कला को "कुंदन कला" कहा जाता है।
- जयपुर कुन्दन कला के लिए प्रसिद्ध है।

**जटपट्टी**

- जसोल (बाड़मेर) से
- बकरी के बालों से बनाई जाती है
- इसे जीरोही, भकला, गंधा के नाम से भी जाना जाता है।

**तारकशी**

- नाथद्वारा, जयपुर।
- चांदी के तारों को बुनकर बनाए गए आभूषणों को तारकशी आभूषण कहा जाता है।

**कावड़**

- यह एक छोटे मंदिर जैसी लकड़ी की मूर्ति/चल मंदिर होती है, जिसमें लकड़ी पर चित्रकारी की जाती है।
- पाठ - कावड़िया भाट द्वारा किया जाता है, इसमें लाल रंग की प्रधानता होती है।
- यह कार्य बस्सी (चित्तौड़गढ़) में खेराड़ी जाति द्वारा किया जाता है।
- कलाकार – मंगीलाल मिस्त्री, द्वारिका प्रसाद जांगिड़।

**खेल उपकरण** – हनुमानगढ़

**शीशम फर्नीचर** – गंगानगर और हनुमानगढ़

**चंदन की नक्काशी** – जयपुर

## कालीन और गलीचे (नमदा)

- प्रसिद्ध केन्द्र - जयपुर एवं टोंक
- राजस्थान में कालीन और गलीचा बुनाई का श्रेय मिर्जा राजा मानसिंह को दिया जाता है।
- कालीनों को सूत और ऊन का उपयोग करके लकड़ी के करघे पर बुना जाता है।
- दरियाँ - जयपुर और बीकानेर की जेलों में बनाई जाती हैं। अन्य प्रमुख केन्द्रों में जोधपुर, नागौर, टोंक, बाडमेर, भीलवाड़ा, शाहपुरा, केकड़ी और मालपुरा शामिल हैं। जोधपुर जिले के सालावास गाँव की दरियाँ काफी प्रसिद्ध हैं।

नोट :

- लेटा खेसला उद्योग: जालौर के लेटा गांव में स्थित है।
- टांकला कालीन उद्योग : नागौर में स्थित है।
- नमदा: लवाण गांव (दौसा) में विकसित कालीन उद्योग अपनी कलात्मक बुनाई और रंग डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है। टोंक नमदा उत्पादन के लिये प्रसिद्ध है।

## राजस्थान की वस्त्र कला

**1. गोटा कार्य**

- सोने और चांदी की परत वाले तारों से कपड़ों पर की जाने वाली कढ़ाई को 'गोटा' कहा जाता है।
- प्रकार: लप्पा, लप्पी, किरण, बांकड़ी, गोखरू, बिजिया, मुकेश, नक्शी आदि।
- कपड़े को रंगने से पहले मोम से लेप करने की कला को 'बाटिक' कहा जाता है।
- प्रसिद्ध केन्द्र: जयपुर और खण्डेला (सीकर)

2. **ज़री वर्क -** प्रसिद्ध केंद्र: जयपुर

3. **कोटा डोरिया -**
- चौकोर चेक पैटर्न में कपास और रेशम के अनूठे मिश्रण वाला एक कपड़ा।
- इसकी उत्पत्ति मैसूर में हुई, बाद में यह कोटा के पास कैथून गांव में स्थानांतरित हो गई। इसलिए साड़ियों को 'कोटा-मसूरिया' के नाम से जाना जाता है।

4. **जयपुरी रजाई -** यह हल्की होने के बावजूद बहुत गर्म होती है, जो ठंडे मौसम के लिए बिल्कुल सही है।
5. **एप्पलिक वर्क -** एप्पलिक वर्क में रंग-बिरंगे कपड़े के टुकड़े एक साथ सीलकर, जानवरों, इंसान के आकार आदि के काटे गए हिस्से कपड़े पर सजा कर खूबसूरत डिज़ाइन बनाए जाते हैं।
6. **फड़**
- केंद्र – शाहपुरा (भीलवाड़ा)
- कपड़े पर चित्रों के माध्यम से किसी लोकदेवता के जीवन का चित्रण
- कलाकार: श्रीलाल जोशी, पार्वती जोशी, गौतली देवी, शांतिलाल, प्रदीप मुखर्जी, दुर्गेश कुमार
- सबसे प्रसिद्ध/सबसे छोटी – पाबूजी की फड़
- सबसे बड़ी – देवनारायण की फड़ (सबसे पुरानी)। 2 दिसंबर 1982 को इस पर डाक टिकट जारी किया गया।

7. कढ़ाई –
- कपड़े पर रंग-बिरंगे धागों से की गई कलात्मक डिज़ाइन को ज़रदोज़ी/कलाबत्तू कहा जाता है।
- पूर्वी राजस्थान में सिलाई, चेन और मोटे टांकों द्वारा कढ़ाई की जाती है।
- मुकेश – सूती या रेशमी कपड़े पर बदला की सहायता से छोटे-छोटे बिंदुओं की कढ़ाई को मुकेश कहा जाता है।
- बदला – चांदी/सोने के धागों से की गई ब्रोकेड कला।
- भरत/सुफ/आरी/हुरमजी कढ़ाई से संबंधित शब्द हैं।

## हैंड-ब्लॉक प्रिंट

### बंधेज / टाई और डाई / रंगाई - छपाई

- प्रसिद्ध केन्द्र - जयपुर एवं जोधपुर
- बंधेज का काम 'चूंदड़ी' और 'साफा' पर लोकप्रिय है।
- प्रकार: दब्बीदार, बेद्दर, चकदार, मोठड़ा, चुनाड़, लहरिया (जयपुर), चुनरी (जोधपुर), पोमचा (जयपुर), बंधनी, बटिक, मोथरा, एकडली, शिकारी, छेन्ट आदि।
- जाजम की छपाई (चित्तौड़) - गाड़िया लुहारों के लिए घाघरा और ओढ़नियों हेतु उपयोग की जाती है

### बगरू प्रिंट, जयपुर

- 'सांगानेरी प्रिंट' के समान, लेकिन हरे आधार के साथ (सांगानेरी सफेद आधार का उपयोग करता है)।
- केवल प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग किया जाता है। ज्यामितीय आकृतियों की प्रधानता होती है। कलाकार – मोहम्मद यासीन छीप्पा (बालोतरा)। परंपरागत रूप से यह कार्य खत्री जाति के लोग करते हैं।

### अजरख प्रिंट,बाड़मेर

- दोनों तरफ छपाई की जाती है तथा छपाई के लिए अधिकतर लाल तथा नीले रंग का प्रयोग किया जाता है।

### मलिर प्रिंट, बाडमेर

- यह ज्यादातर भूरे और काले रंग में मुद्रित होता है।

## दाबू प्रिंट (अकोला, चित्तौड़गढ़)

- इसमें कपड़े के उन हिस्सों पर 'लोई' या 'लुगड़ी' लगाना/दबाना शामिल है जहां रंग की आवश्यकता नहीं होती है। इस 'लोई' या 'लुगड़ी' को 'दाबू' कहा जाता है।
- दाबू के लिए प्रयुक्त सामग्री में क्षेत्रीय विविधताएँ-
  - ✓ सवाई माधोपुर - मोम
  - ✓ बालोतरा- मिट्टी
  - ✓ बगरू और सांगानेर - गेहूँ से बना 'बीघान'

## सांगानेरी प्रिंट ( सांगानेर )

- मलमल के कपड़ों पर छपाई।
- प्रयुक्त रंग - लाल एवं काला
- अमानीशाह नाला पारंपरिक रूप से इस प्रिंट से जुड़ा हुआ है।
- मुन्ना लाल गोयल ने सांगानेरी प्रिंट को पूरी विश्व में मशहूर बनाने में अहम भूमिका निभाई।
- सांगानेर (जयपुर) की सांगानेरी बूटा-बूटी (पुष्प प्रिंट) विश्व प्रसिद्ध है।
- फूलों और पत्तियों को मुद्रित करने के लिए छिद्रित डिजाइन वाले पीतल के सांचों का उपयोग किया जाता है।

**नोट:**

- ओढ़नी के प्रकार:
  - ✓ तारा भांत, केरी भांत, लहर भांत, झवार भांत – ये प्रकार आदिवासी महिलाओं द्वारा पहने जाते हैं।
  - ✓ राजशाही लहरिया (जयपुर) – यह हल्के गुलाबी रंग की क्षैतिज रेखाओं के लिए प्रसिद्ध है।
  - ✓ समुद्र लहरिया – जयपुर में प्रसिद्ध
- पगड़ी के प्रकार:
  - ✓ उदयशाही, भीमशाही, अमरशाही, चुंडावतशाही, जसवंतशाही, राठौडी , मेवाड़ी
- जाजम/आज़म छपाई – चित्तौड़गढ़
- धनुष-बाण निर्माण – चंदूजी का गढ़ा (बांसवाड़ा) और बोडीगामा (डूंगरपुर)
- तलवारें – सिरोही। प्रसिद्ध तलवारें: रोटी तलवार, सकीला, नालदार, लहरिया, भोगालिया, मोती लहर, कुलाबो। वर्तमान में प्रसिद्ध कलाकार – महेंद्र लोहार

Toppersnotes
Unleash the topper in you

## राजस्थान में हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिये किये गये प्रयास

- **राजस्थान राज्य हथकरघा विकास निगम (RSHDC) – मार्च 1984**
  - ✓ राज्य में हथकरघा क्षेत्र के विकास हेतु हथकरघों का आधुनिकीकरण करना, व्यक्तिगत बुनकरों को प्रशिक्षण देना, उनके उत्पादों के विपणन में सहायता करना और कच्चा माल उपलब्ध कराना।
- **ग्रामीण गैर-कृषि विकास एजेंसी (RUDA)**
  - ✓ यह एजेंसी राजस्थान सरकार द्वारा नवंबर 1995 में स्थापित की गई।
  - ✓ कार्य: ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्यमों के क्लस्टर विकसित कर सतत् आजीविका के अवसर उपलब्ध कराना।
- **राजस्थान लघु उद्योग निगम (RAJSICO)**
  - ✓ 3 जून 1961 को कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत स्थापित।
  - ✓ उद्देश्य – लघु उद्योग और हस्तशिल्प इकाइयों को वित्तीय सहायता और प्रोत्साहन देना, कच्चा माल उपलब्ध कराना तथा निर्मित वस्तुओं के लिए विपणन सुविधाएं प्रदान करना।

- औद्योगिक नीति, 1998 - राजस्थान सरकार ने हस्तशिल्प उद्योग में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिए कई प्रयास किए हैं।
- राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार – भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। राशि: ₹1 लाख।

**नोट: राजस्थान की पहली हस्तशिल्प नीति**

- लॉन्च - 17 सितम्बर, 2022
- राजस्थान हस्तशिल्प नीति जारी करने वाला देश का तीसरा राज्य है।

- राजस्थान में हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख पहल –
  - ✓ उदयपुर में शिल्प ग्राम
  - ✓ जोधपुर में पाल शिल्पम ग्राम
  - ✓ जवाहर कला केंद्र जयपुर में
  - ✓ जयपुर में राजस्थली एम्पोरियम - राजस्थान के हस्तशिल्प को विपणन और लोकप्रिय बनाने के लिए।
  - ✓ जयपुर में अमृता हाट।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम –
  - ✓ **"राजस्थान लघु उद्योग निगम " द्वारा 1992 में शुरू की गई** । यह पहल राज्य के स्थानीय कारीगरों के कौशल को बढ़ाने के लिए की गई थी।
  - ✓ यह निगम राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान करता है, जिसमें दक्षता प्रमाण पत्र अर्जित करने वाले कारीगरों के लिए 25,000 रुपये और 5,000 रुपये शामिल हैं।
- निर्यात प्रोत्साहन – यह निगम सांगानेर (जयपुर) में स्थापित एक एयरकार्गो कॉम्प्लेक्स के साथ, निर्यात सुविधाएं भी प्रदान करता है।

**नोट:** राजस्थान संभाग ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले, 2000 में सिल्वर अवार्ड जीता, जो प्रतिवर्ष प्रगति मैदान, न्यू दिल्ली में आयोजित किया जाता है।

## <u>भौगोलिक संकेत (GI) टैग</u>

- GI टैग एक प्रकार की बौद्धिक संपत्ति (Intellectual Property) है, जिसका उपयोग पारंपरिक उत्पादों को सुरक्षा देने के लिए किया जाता है, जिनका किसी स्थान विशेष से गहरा संबंध होता है।
- अगस्त, 2023 में राजस्थान के पांच पारंपरिक कलाकृतियों को GI टैग दिया गया:
  - ✓ जोधपुर बंधेज कार्य
  - ✓ उदयपुर की कोफ्तागिरी धातु शिल्प
  - ✓ नाथद्वारा पिछवाई कला (राजसमंद)
  - ✓ बीकानेर उस्ता कला
  - ✓ बीकानेर की कशीदाकारी (हाथ की कढ़ाई कला)
  - ✓ केर सांगरी (थार मरुस्थल) (मई, 2025)
  - ✓ नागौरी अश्वगंधा (नागौर, जनवरी 2026)

Toppersnotes Unleash the topper in you

**GI टैग प्राप्त राजस्थान की वस्तुएं**

| GI टैग | क्षेत्र | वस्तु/कला |
|---|---|---|
| बगरू प्रिंट | जयपुर | हस्तशिल्प |
| बीकानेरी भुजिया | बीकानेर | खाद्य सामग्री |
| ब्लू पॉटरी | जयपुर | हस्तशिल्प |
| ब्लू पॉटरी (लोगो) | जयपुर | हस्तशिल्प |
| कठपुतली (आमतौर पर साखू/सागवान की लकड़ी से बनाई जाती है) | उदयपुर | हस्तशिल्प |
| कठपुतली (लोगो) | उदयपुर | हस्तशिल्प |
| कोटा डोरिया | कोटा | हस्तशिल्प |
| कोटा डोरिया (लोगो) | कोटा | हस्तशिल्प |
| मकराना मार्बल | मकराना (नागौर) | प्राकृतिक वस्तु |
| मोलेला मिट्टी कार्य | मोलेला, नाथद्वारा (राजसमंद) | हस्तशिल्प |
| मोलेला मिट्टी कार्य (लोगो) | मोलेला, नाथद्वारा (राजसमंद) | हस्तशिल्प |
| फुलकारी | राजस्थान, पंजाब, हरियाणा | हस्तशिल्प |
| सांगानेरी प्रिंट | जयपुर | हस्तशिल्प |
| थेवा कला | प्रतापगढ़ | हस्तशिल्प |
| पोकरण पॉटरी (2018 में मिले) | पोकरण (जैसलमेर) | हस्तशिल्प |
| सोजत मेहंदी (सितंबर) 2021) | सोजत (पाली) | प्राकृतिक वस्तु |

Toppersnotes
Unleash the topper in you